23

मनोलैंगिक विकास: फ्रायड की अवधारणा

* टॉमी फिलिप

प्रस्तावना

मनोलैंगिक विकास के सिद्धान्त जो लिबिडिनल विकास के सिद्धान्त के रूप में भी जानी जाती है, पूर्व के सिद्धान्तों में से एक है जो यंह स्पष्ट करता है कि मानव में व्यक्तित्व का विकास कैसे होता है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत संवेगात्मक रूप में विक्षिप्त लोगों के साथ की गई फ्रायड के नैदानिक शोध का परिणाम निहित है। मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त फ्रायड द्वारा प्रस्तावित मनोगतिशील व्यक्तित्व सिद्धान्त का समेकित अंग है। प्रायः फ्रायड को प्रथम मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तदाता के रूप में माना जाता है जिसने विकासात्मक पक्ष पर बल दिया है तथा शैशवाकाल एवं बाल्यावस्था के दौरान प्रारम्भिक अनुभवों को प्रौढ़ व्यक्ति की आधारभूत चरित्र संरचना में निर्णायक बताया है।

फ्रायड के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन अवधि में गतिशील–विभेदित विकासात्मक अवस्थाओं की एक श्रृंखला से गुजरता है। जो एकार्यात्मकता के स्पष्ट माध्यम द्वारा लक्ष्य वर्णित है। विभिन्न अवस्थाओं के दौरान विशेषकर प्रारम्भिक बाल्यावस्था में हुए आघात मनोवैज्ञानिक समस्याओं, मानसिक विक्षिप्त के कारकों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संावेगिक रूप से अशांत व्यक्तियों के अपने प्रारम्भिक शोध पर आधारित तथ्यों में फ्रायड ने पाया कि प्रौढ़ावस्था के दौरान पाए जाने वाले मानसिक समस्याओं के लक्षण कामुक–प्रवृत्ति की कुण्ठा से सम्बन्धित होते हैं। इस प्रकार की कुण्ठा प्रायः जीवन के प्रथम वर्ष में होती है तथा सम्पूर्ण बाल्यावस्था के दौरान चलती रहती है। फ्रायड ने इस प्रकार इस विश्वास का नेतृत्व किया कि बच्चे कामुक–अन्तःप्रेरणा की अभिव्यक्ति प्रदर्शित करते हैं तथा यह कि व्यक्तित्व सम्बन्धी कोई भी सिद्धान्त शैशवकालीन कामुकता को अवश्य दृष्टिगत रखें।

लैंगिकता की अवधारणा

फ्रायड के अनुसार लिंग व्यक्ति में सर्वाधिक महत्वपूर्ण जीवन–प्रवृत्ति है। उनके अनुसार कामुक इच्छाओं को बढ़ाने वाली अनेक शारीरिक आवश्यकताओं के केन्द्र बिन्दु के रूप में लिंग प्रवृत्ति होती है। इनमें से प्रत्येक इच्छाओं की उत्पत्ति विभिन्न शारीरिक क्षेत्रों से होती है। जिसे कामोत्तेजक क्षेत्र से संदर्भित किया जाता है। कामोत्तेजक–क्षेत्र त्वचा अथवा

* टॉमी फिलिप, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

श्लेष्मा–कला का अंग होता है। जो क्षोभ के प्रति अत्यन्त सुग्राही होता है तथा जब क्षोभ को विशिष्ट तरीके से दूर करने के लिए प्रयास किया जाता है तब आनन्ददायक भावनाएं व अनुभव होता है। होंठ और मुँह, गुदा क्षेत्र तथा लिंग–अंग कामोत्तेजक क्षेत्र के उदाहरण हैं। अतः चूषण मुखानन्द उत्पन्न करता है, गुदा आनन्द देता है तथा रगड़ना जनांनगी आनन्द देता है। संक्षेप में फ्रायड लैंगिक प्रवृत्ति को मनोदैहिक प्रक्रिया मानते हैं जो मानसिक एवं शारीरिक दोनों अभिव्यक्ति रखता है। इसके लिए विशिष्ट पद (लिबिडो) कामलिप्सा का प्रयोग किया है जो एक शक्ति है जिससे मन में लैंगिक प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व होता है।

सार स्वरूप, फ्रायड ने लैंगिकता पद को व्यक्ति के लैंगिक जीवन के संदर्भ में उपयोग किया है। उनके अनुसार लैंगिकता केवल प्रौढ़ों का मामला ही नही है वरन शिशुओं से भी सम्बन्धित है। यह पूर्ण प्रसरणशील है तथा वे समस्त क्रियाएँ एवं संवेदना इसके अन्तर्गत आती हैं जो आनन्ददायक व इन्द्रिंय–तुष्टि के लिए होती हैं। फ्रायड ने यह देखा कि जन्म से ही शिशु लैंगिक क्रियाओं के लिए सक्षम होते हैं। शैशवाकालीन लैंगिकता की प्रारम्भिक तुष्टि शारीरिक क्रियाकलापों के सम्बन्ध में उत्पन्न होती है जैसे– आहार ग्रहण करना तथा शौच आदि निष्पादन। फ्रायड की समस्त अवधारणाएँ जिनको लेकर वह शिशुओं एवं युवा बालकों के लैंगिक जीवन के संदर्भ में आगे बढ़े उसकी विभिन्न दिशाओं से कटु आलोचना की गई।

मनोलैंगिक विकासात्मक अवस्थाएँ

जीवन प्रवृत्ति की स्थिर क्रियाओं के माध्यम से व्यक्तित्व विकास सम्पन्न होता है। एक व्यक्ति में लिंग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जीवन प्रवृत्ति है, जीवन प्रवृत्ति को सक्रिय बनाने के लिए विभिन्न लैंगिक क्रियाओं का होना अनिवार्य होता है। लिंग एक जैविक प्रवृत्ति है, जिसे पारितोषित करने की आवश्यकता होती है। इसको रोकने या बचाने से तनाव उत्पन्न होता है तथा जब इसको पूर्ण किया जाता है तो संतोष की प्राप्ति होती है। लैंगिकता की प्रारम्भिक अभिव्यक्ति शारीरिक क्रियाओं के सम्बन्ध में दिखायी देती है जो मूल रूप से लैंगिक नहीं होती जैसे– दूध पीना शरीर से अनुपयोगी तत्वों का निरसन करना। प्रत्येक व्यक्ति जीवन के प्रथम पांच वर्षों के दौरान अवस्थाओं की एक श्रृंखला से गुजरता है तदोपरान्त पाँच या छः वर्षों की अवधि की गतिशीलता कम या अधिक स्थिर हो जाती है। किशोरावस्था आने पर गतिशीलता पुनः प्रारम्भ होती है तथा तब किशोरावस्था की प्रगति के रूप में प्रौढ़ावस्था की अवस्था में स्थिर हो जाती है। फ्रायड के लिए जीवन के प्रथम पांच वर्ष व्यक्तित्व के निर्माण में निर्णायक होते हैं।

प्रत्येक मनोलैंगिक अवस्था शरीर के विशिष्ट क्षेत्र की प्रतिक्रिया के तरीके के संदर्भ में परिभाषित की जाती है। नवजात शिशु के जीवन के प्रथम 18 महीनों के दौरान मुख गतिशील क्रिया के प्रमुख क्षेत्र के रूप में कार्य करता है। इसी कारण इस अवस्था को मुखकामावस्था कहा जाता है। मुख–कामावस्था के दौरान निरसन प्रकार्य के क्षेत्र से आनन्द के प्राप्ति होती है इसी कारण इसे मुखकामावस्था कहा जाता है। यह आगे 18 महीने तक चलता है तथा इसके बाद शैशवावस्था स्थान ग्रहण करती है। जिसमें यौनांग लैंगिक/कामुक क्षेत्र के रूप में नेतृत्व करते हैं। इन अवस्थाओं के दौरान, मुख की श्लेष्मा–कला, गुदा तथा वाह्य जननेंद्रिय, विकास की अवस्था के आधार पर बच्चे की कामोत्तक जीवन का केन्द्र बिन्दु बन जाते हैं। पाँचवे वर्ष के अन्त में बच्चा काम प्रसुप्ति अवस्था में प्रवेश करता है जहाँ काम–अन्तःप्रेरण अवदमन की स्थिति में रहता है। किशोरावस्था के प्रारम्भ होने के साथ जननेंद्रिय–पूर्व आवेग पुनः सक्रिय हो जाते हैं तथा व्यक्ति विकास की जननांगी अवस्था में प्रवेश करता है। इन अवस्थाओं के सम्बन्ध में हम विस्तार से अध्ययन करेंगे।

मुखकामावस्था

यह अवस्था शिशु में जन्म से लेकर 18 महीनों तक मानी जाती है। इस अवस्था में आनन्द प्राप्ति का मुख्य साधन चूषण होता है। चूषण में मुख का स्पर्श–उद्दीपन साथ ही साथ निगलना निहित होता है। बाद में जब दांत विस्फुटित होता है बच्चा मुख को काटने तथा चबाने के लिए उपयोग करता है जैसा कि बच्चा प्राथमिक रूप से आनन्द प्राप्त करने से सम्बद्ध होता है. वह आवश्यकताओं का परितोषण तुरन्त चाहता है। आनन्द प्राप्त करने में शिशु की आवश्यकता माता के स्तनपान में चूषण करने द्वारा पर्याप्त रूप से पूर्ण होती है क्योंकि कामोत्तेजक अन्तर्नोद मुख में स्थित होता है। जैसा कि इस अवस्था में आवश्यकताओं का परितोषण माता पर निर्भर होता है, वह बच्चे के लिए प्यार का प्रथम पात्र होती है। माता के स्तन का आभास करना युवा बच्चे के दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों ही रूपो में महत्वपूर्ण क्रिया होती है। इसी कारण, मनोविश्लेषण के अन्तर्गत जन्म से लेकर लगभग 8 मास की अवस्था को मुख–चूषण अवस्था कहा जाता है। दांतों के विकास के साथ बच्चा अपने विकास की नई अवस्था में प्रविष्ट होता है जिसे मुख द्वारा काटने की अवस्था कहा जाता है। मुख द्वारा काटने की अवस्था के दौरान आनन्द प्राप्ति की विधि परिमार्जित हो जाती है। इसका साधन काटने के साथ ही साथ चूषण व निगलना भी होता है। ऐसा सुनिश्चित है कि मौखिक क्रियाओं की दो विधियाँ हैं अर्थात् चूषण व निगलना तथा काटना/चबाना, बाद में विकसित होने वाले अनेक विशेषज्ञों के लिए आदि प्रारूप है।

गुदा कामावस्था

यह अवस्था तब प्रारम्भ होती है जब शिशु लगभग डेढ़ वर्ष की आयु का होता है, और उसके तीन वर्ष के होने पर समाप्त होती है।

गुदा कामावस्था की प्रारम्भिक अवस्था के दौरान उत्सर्जन की आनन्ददायक संवेदना होती है तथा बाद में मल के अवधारणा के माध्यम से गुदा–श्लेष्मा की कामोत्तेजक संवेदना होती है। यह अवस्था दो उप–अवस्थाओं जैसे– गुदा निष्कासी अवस्था तथा गुदा अवधारण अवस्था में विभक्त है। गुद निष्कासी चरण मुख कामावस्था की समाप्ति के साथ मिश्रित होती है। यहाँ शिशु के लिए आनन्द प्राप्ति की विधि मल निष्कासन है। मल निष्कासन कष्ट को समाप्त करता है और आराम की भावना उत्पन्न करता है। जब स्वच्छता प्रशिक्षण प्रारम्भ किया जाता है शिशु सहज प्रवृत्तिक आवेग के वाह्य नियम के साथ प्रथम अनुभव करता है। शिशु उस आनन्द को स्थगित करना सीखता है जो गुदा तनाव दूर करने से होता है। गुद अवधारण अवस्था के दौरान शिशु से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वच्छता प्रशिक्षण की माँग पूरी करे। शिशु को सीखना होता है कि वह निष्कासन के बजाएँ अवधारण से आनन्द अर्जित करे। माता द्वारा स्वच्छता प्रशिक्षण विशिष्ट विधि के उपयोग तथा शिशु की सम्बन्धित भावनाओं पर निर्भर होता है कि स्वच्छता प्रशिक्षण के परिणाम, विशिष्ट व्यक्तित्व विशेषक एवं मूल्यों के सृजन में दूरगामी प्रभाव डालते हैं।

शैशनावस्था

यह अवस्था तब प्रारम्भ होती है जब बच्चा तीन वर्ष की अवस्था का हो जाता है और तब तक चलती रहती है जब तक वह पाँच वर्ष का न हो जाय। इस अवस्था के दौरान बच्चे में लिंग सम्बन्धी प्रारम्भिक बातें देखी जा सकती हैं। बच्चा अपने काम–अंगों से खेलता है और तनावमुक्त होता है तथा आनन्द की प्राप्ति करता है। कामोत्तेजक क्रियाएँ प्रारम्भिक रूप से मूत्र निरासन से सम्बन्धित क्रियाओं एवं संवेदनाओं के साथ मनोवैज्ञानिक व शारीरिक रूप से संबद्ध होती है। मूत्र निरासन एक महत्वपूर्ण क्रिया है क्योंकि यह बच्चे को अपने यौन सम्बन्धी अस्तित्व के समाकलन में सहायता करती है। एक लड़का समझता है कि वह लड़का है और इसी प्रकार एक लड़की समझती है कि वह लड़की है, प्रारम्भिक दौर में ऐसा मूत्र निरासन की प्रक्रिया से होता है।

शैशनावस्था के विकास के दौरान जनन–अंगों के प्रकार्यों से संबंध लैंगिक भावनाएँ केन्द्र बिन्दु होती हैं। जननांगों के साथ खेलने एवं बच्चे को काल्पनिक जीवन से आनन्द प्राप्त होता है तथा लड़कियों एवं लड़कों में क्रमशः इडिपस एवं एलेक्ट्रा मनोग्रन्थि के प्रदर्शनार्थ अवस्था निश्चित होती है। यूनान के राजा थोबिस के नाम पर इडिपस–मनोग्रन्थि नाम दिया

गया है जिसने अपने पिता की हत्या कर अपनी माता से विवाह किया था। इपिडस मनोग्रन्थि के अन्तर्गत पुत्री का पिता से तथा पुत्र का माता से यौन सम्बद्धता होती है तथा समान यौन के अभिभावकों के प्रति शत्रुता की भावना होती है। पुत्र माता पर अपना अधिपत्य जमाना चाहता है और पिता को हटाना चाहता है। एलेक्ट्रा मनोग्रन्थि के अनुसार पुत्री पिता पर अधिकार जमाना चाहती है और माता को हटाना चाहती है। ये भावनाएँ हस्तमैथुन की क्रिया के दौरान बच्चे की कल्पनाओं में अपने आप प्रदर्शित होती हैं। शैशनावस्था की मुख्य घटना के रूप में इडिपस एवं एलेक्ट्रा मनोग्रन्थियों की उपस्थिति विचारणीय है।

इडिपस मनोग्रन्थि के अन्तर्गत पुत्र में माता के प्रति अगम्यगमन चाहत तथा पिता के प्रति विरोध की धारणा विकसित होती है। वह कल्पना करता है कि उसका पिता उसे हानि पहुँचाने जा रहा है। इस भय को पिता का कटु एवं विरोधी व्यवहार सत्यापित कर सकता है। उसका भय इस बात से सम्बन्धित होता है कि उसका पिता उसके प्रति क्या कर सकता है, यह जननांगों पर केन्द्रित होता है क्योंकि ये अंग माता से सम्बद्धता का साधन होता है। वह डरता है कि पिता अलग कर देगा। शिशनलोप का भय बच्चे को इडिपस मनोग्रन्थि को दूर करने में सहायता करता है क्योंकि वह अपना जननांग को खोना नहीं चाहता। शिशनलोप–दुश्चिन्ता माता के लिए कामेच्छा के दमन को उत्पन्न करता है तथा पिता के प्रति शत्रुता का भाव उत्पन्न करता है। यह पिता के साथ तादात्म बनाने में भी सहायता करता है। पिता के साथ तादात्म करके बालक माता के प्रति कामुक भावना को हानिरहित स्नेहपूर्ण भावना में बदल देता है। इपिडस मनोग्रन्थि, शैशवाकालीन कामुकता के विकास के चरम का प्रतिनिधित्व करता है।

एलेक्ट्रा मनोग्रन्थि में लड़की अपने प्यार की वस्तु का आदान–प्रदान एक नई वस्तु के रूप में पिता से करती है। लड़की में यह बात तब उत्पन्न होती है जब वह यह खोज निकालती है कि उसके पास लड़के की तुलना में कम क्षमता (साधन) है क्योंकि उसके पास स्पष्ट जननांग–पेनिस नहीं होता। इस बात के लिए वह माता को उत्तरदायी मानती है और उससे घृणा करने लगती है कि वह लड़कों की तुलना में कम अंग के साथ उसे संसार में लायी है। वह अपना प्यार पिता को स्थानान्तरित करती है क्योंकि उसके मूल्यवान अंग है जिसे वह उसके साथ हिस्सेदारी करना चाहती है। लड़कों में शिशनलोप–दुश्चिन्ता का प्रतिरोधी पेनिस असूया है। एक लड़की वास्तविक अवरोधों को मान्यता देते हुए अपने पिता के लिए अगम्यगमन सम्बद्धता को निश्चित करती है जो पिता के साथ यौन इच्छा की तुष्टि करने से बचाती है। फ्रायड के अनुसार इपिडस और एलेक्ट्रा मनोग्रन्थियों के निश्चय में भिन्नता दोनों यौनों में मनोवैज्ञानिक भिन्नता का आधार है।

काम प्रसुप्ति अवस्था

फ्रायड के अनुसार पाँच वर्ष की अवस्था के अन्त में शैशवाकालीन–कामुकता, सामाजिक परिणामों तथा यह सिद्ध होने पर कि उसके प्यार की वस्तु प्राप्त नहीं होगी धीरे–धीरे दब जाती है। लगभग पांच या छः वर्ष की आयु के दौरान बच्चा लैंगिक मामलों में सचेत रूप से सम्बद्ध नही रहता। जैसा कि काम प्रसुप्ति का साहित्यिक अर्थ इंगित करता है कि लैंगिक अन्तःप्रेरण इस अवस्था में छुपी रहती है। बच्चे की सक्रिय रुचि वाह्य जगत की ओर उन्मुख होती है। इस अवस्था के दौरान, लैंगिक अन्तःप्रेरण मनोरंजनात्क, शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्रों की ओर मुड़ जाती है। बच्चा समाज में व्यवहार करना सीखता है तथा अपना आदर्श प्राप्त करता है। कामोत्तेजकता अभिभावकों एवं मित्रों से संबद्धता के रूप में स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। विरोधी लिंग के प्रति रुचि निम्नतम हो जाती है। बच्चा अपनी सारी ऊर्जा अपने को प्रदर्शित करने एवं सिद्ध करने में व्यय करता है। बच्चे की ऊर्जा सक्षमता का संवेदन विकसित करने की दिशा में उन्मुख होती है। विकास की इस अवस्था के दौरान, बच्चे की लैंगिक अन्तप्रेरण बौद्धिक क्षेत्र के अन्तर्गत होती है। शैशनावस्था के उपरान्त व्यक्तित्व विकास के बारे में मनोविश्लेषण के पास बहुत कुछ कहने को बचता है। कुछ भी हो यह विकास की आनुवाशिंक अवस्था को विश्लेषित करता है।

जननांगी अवस्था

यह अवस्था किशोरावस्था के प्रारम्भ के साथ शुरू होती है। जननांगी अवस्था के दौरान नई गहनता और अधिक परिपक्व स्वरूप लैंगिक भावनाएँ प्रदर्शित होती हैं। परिणामस्वरूप बच्चे का स्व–प्रेम उपयुक्त प्रतिरोधी लैंगिक सम्बन्धों की दिशा में बढ़ती है। लैंगिक आकर्षण, समाजीकरण, सामूहिक क्रियाएँ, व्यावसायिक योजना तथा विवाह की तैयारी और परिवार उत्पन्न करने की बातें प्रदर्शित होने लगती हैं। व्यक्ति एक आनन्द चाहने वाले, स्व–प्रेमी शिशु से वास्तविकता अनुस्थापित, समाजीकृत प्रौढ़ में परिवर्तित होता है। जननांगी अवस्था प्रमुख जैविकी कार्य पुनर्भिव्यक्ति है।

स्थिरीकरण

स्थिरीकरण इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि पूर्व जननांगी विकास की विशिष्ट अवस्था के प्रति लैंगिक प्रवृत्ति की स्थाई सम्बद्धता विद्यमान होती है। केवल अन्तिम को छोड़कर किसी भी मनोलैंगिक विकासात्मक अवस्था में ऐसा हो सकता है, विकास के इस क्षेत्र में बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वह एक विशिष्ट अवस्था के अन्त में एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्राकृतिक संचारिता लिए बच्चे को तैयार करते हैं। किसी एक विशिष्ट

विकास तब इस अवस्था में अपने प्यार की वस्तु से सम्बन्ध मोहभंग कर दूसरी वचनबद्धता मगर पूर्णतः निश्चित नहीं, प्यार की वस्तु के प्रति सम्बद्धता प्रदर्शित करने की बच्चे की क्षमता, स्वस्थ्य व्यक्तित्व के विकास की अनिवार्य शर्त हैं। फ्रायड के निश्चयानुसार स्थिरण किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास को विपरीत रूप से प्रभावित करता है। यह उल्लेखनीय है कि स्थिरीकरण का व्यावहारिक प्रदर्शन मनोलैंगिक विकास की अवस्था, जिसमें यह उत्पन्न होता है तद्नुसार फर्क होता है। उदाहरणार्थ, मुखकामावस्था में प्यार की वस्तु के रूप में माता के प्रति मोहभंग करने की बच्चे की अक्षमता अंगूठा चूसना, मदिरापान करना, सिगरेट पीना आदि जैसे व्यवहार को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार के व्यावहारिक प्रतिमान मुखकामावस्था के प्यार की वस्तु के साथ कामुक सम्बद्धता को जारी रखने में व्यक्ति की सहायता करता है। इसी तरह वह होंठ एवं मुंह के कामोत्तेजक क्षेत्र के संवेदन में आनन्द प्राप्त करता है। इसी प्रकार स्थिरण गुदा, शैश्ना एवं कामप्रसुप्ति अवस्थाओं में भी उत्पन्न हो सकता है।

व्यक्तित्व के विकास के लिए मनोलैंगिक अवस्थाओं का महत्व

हमारे व्यक्तित्व के अनेक विशेषज्ञों एवं व्यवहार प्रतिमानों की उत्पत्ति की जड़े मनोलैंगिक विकास की अवस्थाओं में होती हैं। मनोविश्लेषण के अनुसार प्रौढ़ व्यवहार शैशवकालीन मनोलैंगिक अवस्था का परिणाम होता है। फ्रायड के अनुसार व्यक्ति की यौन ऊर्जा विस्थापन, उदात्तीकरण एवं प्रतिक्रिया निर्धारण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से उनके व्यवहार में निहित होता है। उदाहणार्थ किसी प्रौढ़ की लैंगिक कल्पनाएँ शैशना जननांगी की निरन्तरता के रूप में देखी जाती है। इसी प्रकार अत्यधिक स्वच्छता या प्रशासन एवं नियमितता पर अत्यन्त बल देना शैशवकालीन–मनोलैंगिकता की गुदा कामावस्था के प्रतिरोधी प्रतिक्रिया–निर्धारण के रूप में माना जाता है। मनोलैंगिक जननांगी की प्रक्रिया द्वन्द्वात्मक वृद्धि में से एक है। यह विभिन्न मनोलैंगिक विकसात्मक अवस्थाओं के दौरान व्यक्ति के अनुभवों के आधार पर सामान्य या असामान्य व्यवहार की सीमा तक पहुंच सकता है।

मुखकामावस्था के दौरान विकसित व्यक्तित्व विशेषगुण

चूषण एवं निगलने की मुखकामावस्था की क्रियाएं अनेक चारित्रिक विशेषकों के लिए आदि प्ररूप हैं जो किसी के जीवन के आने वाले वर्षों के दौरान विकसित होती है। मुख समाकलन से आनन्द प्राप्त करना अन्य समाकलन के तरीकों के रूप में स्थानापन्न किया जा सकता है जैसे ज्ञानार्जन या अधिपत्य स्थापित करने से आनन्द प्राप्त करना। काटना

या मुखाक्रोश तार्किकता या कटुता के रूप में स्थानान्तरित होती है। विभिन्न प्रकारों के स्थानान्तरण एवं उदात्तीकरण द्वारा साथ ही साथ प्रारम्भिक मुखीय आवेगों के विरूद्ध रक्षायुक्तियों द्वारा मुखीय प्राकार्य के प्रोटोटाइपिक तरीके, रुचियों, मनोवृत्तियों एवं चारित्रिक विशेषकों के विस्तृत नेटवर्क के विकास हेतु आधार प्रदान करते हैं।

जैसा कि मुखकामावस्था उस समय होती है जबकि शिशु पूर्णतः माता पर निर्भर रहता है मगर निर्भरता की भावनाएँ इसी अवस्था के दौरान उत्पन्न होती हैं। अगर माता बच्चे की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में इस बिन्दु पर सफल होती है, तब निर्भरता 'आशा' का सद्गुण प्राप्त करने में अगुवाई करती है। आशा की भावना विश्वास द्वारा इंगित की जाती है कि बच्चे की आवश्यकताओं की देखरेख माता द्वारा सुचारू रूप से की जाती है। बच्चे का यह विश्वास माता के साथ विश्वसनीय तथा घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने में सहायता करता है जो अन्ततोगत्वा जीवन के प्रति विश्वास उत्पन्न करता है। इस अवस्था के दौरान बच्चे और माता के साथ पालन–पोषण एवं घनिष्ठ सम्बन्ध भावी जीवन में अन्य लोगों के साथ विश्वास एवं स्नेहपूर्ण सम्बन्ध के लिए स्थिति निर्धारण करता है। माता के द्वारा अस्वीकरण या बच्चे द्वारा अवांछित कुण्ठा का अनुभव जो आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण होता है, भावी जीवन को निराशवादी बना सकता है। इस मुखावस्था में बच्चे का, उसके पर्यावरण में निर्णायक लोगों से सम्बद्धता तथा इन लोगों के प्रति प्यार या घृणा की भावनाएँ बच्चे में विकसित होती है। यदि इस अवस्था में बच्चे और माता के बीच आधारभूत रूप से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होता है तो यह स्थिति भावी जीवन में दूसरों के साथ विश्वसनीय एवं स्नेहपूर्ण सम्बन्ध विकसित करने का आधार निश्चित करेंगी। यदि आशावादी प्रारूपी है या व्यक्ति मुख चूषण मजबूती के साथ सुनिश्चित करता है, निराशावाद उन व्यक्तियों का विशेषक है जिन्होंने मुख से काटने की अवस्था की कुण्ठा को कभी भली–भांति समाप्त नहीं किया। इसके आधिक्य के मामले में यह निराशवाद पूरी तरह से सामान्य सीमाओं को पार कर लेता है और मनोवैज्ञानिक सीमाओं को पार कर लेता है और मनोवैज्ञानिक उदासीनता हो जाती है। इस प्रकार, यहाँ तक कि प्रथम वर्ष में व्यक्तित्व के कुछ चारित्रिक विशेषक स्थापित होते हैं।

गुदाकामावस्था के दौरान विकसित व्यक्तित्व विशेषगुण

मनोविषलेषण के अनुसार गुदावस्था के दौरान अहम् विकास पूर्ण हो जाता है। परिणामस्वरूप बच्चे में वास्तविकता संवेदन आनन्द प्राप्ति से आच्छादित होता है। मातृक देखरेख के साथ स्वच्छता प्रशिक्षण के कारण संघर्ष बच्चे के लिए आनन्द प्राप्ति की दिशा बदलता है। कुछ व्यक्तियों में बाधित स्वच्छता प्रायः गदावस्था के प्रतिगमन के रूप में देखी जाती है। माता

द्वारा स्वच्छता प्रशिक्षण के लिए उपयोग की गई विशिष्ट विधि तथा मलोत्सर्ग के संदर्भ में उसकी भावनाओं के आधार पर इस प्रशिक्षण का परिणाम विशिष्ट व्यक्तित्व विशेषकों के निर्धारण पर दूरगामी प्रभाव डाल सकता है। यदि माता बच्चे के लालन पालन की अपनी विधि में बहुत अधिक कठोर होती है, तो बच्चा अपने मल त्याग रोक सकता है और कब्ज पीड़ित होता है। यदि प्रतिक्रिया का यह तरीका अन्य तरह के व्यवहार के प्रति सामन्यीकरण करता है तो यह अपने चरित्र से दुराग्रही एवं जिद्दी हो जाता है। बावजूद इसके यदि बच्चा उचित समय के अतिरिक्त मलमूत्र त्याग करता है तो निष्कासी विशेषक जैसे क्रूरता, विघटनात्मकता, चिड़चिड़ापन, विसंगतियाँ आदि विकसित हो जाती हैं। इस प्रकार गुदावस्था के दौरान बड़ी संख्या में व्यवहार के विशेषकों की आधारभूत नींव पड़ जाती है।

स्वच्छता प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण क्रिया है जैसा कि व्यक्ति में मूल्यों एवं विशेषकों के विकास की ओर अग्रसर करता है। सामाजिक नियंत्रण के प्रति मल विसर्जन के परिणामस्वरूप बच्चा कामुक तुष्टि पाना सीखता है। गुदा निष्कासी अवधि को सामान्य निरन्तरता में मल, मल सम्बन्धी आदतें तथा प्रतिदिन की मल की गतिशीलता में रुचि भी सम्मिलित होती है। कुछ लोग मल से इतना सम्बद्ध होते हैं कि उनकी यह रुचि उनके व्यक्तिगत व्यक्तित्व का केन्द्र बन जाती है। गुदा संघर्ष के स्थिरांक की उत्पत्ति करती है जिसे गुदा चरित्र कहा जाता है। गुदा चरित्र विशेषकों द्वारा विभाजित किया जाता है जैसे विस्तार के प्रति अत्यधिक निष्ठा तथा चरित्र की नकारात्मकता जिससे शीघ्र उत्पन्न होती है।

शैशनावस्था के दौरान व्यक्तित्व विशेषगुणों का विकास

शैशनावस्था के दौरान बच्चे का व्यवहार इडिपस मनोग्रन्थि के क्रियान्वयन द्वारा इगित होता है। यद्यपि पाँच वर्ष की अवस्था के बाद इसका परिमार्जन हो जाता है जो सम्पूर्ण जीवन में व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में स्थापित रहता है। विरोधी लिंग तथा सम्प्रभु लोगों के प्रति मनोवृत्ति इडिपस मनोग्रन्थि द्वारा बड़े पैमाने पर प्रतिबन्धित होती है। इडिपस मनोग्रन्थि का प्रतिदमन के कारण पराहम् अन्तिम रूप में विकसित होता है। फ्रायड के अनुसार इडिपस एवं एलेक्ट्रा मनोग्रन्थियों के प्रस्तावों में विभिन्नताएँ आगामी जीवन में पुरुष एवं महिला व्यक्तित्वों में भिन्नता का आधार होता है। फ्रायड के विचार से महिलाएँ लिंग असूया तथा सम्बन्धित मनोगत्यात्मकताओं के कारण मूलरूप में क्षीण, आश्रित एवं हीन होती हैं। इस विचारधारा की विश्वव्यापी रूप से आलोचना की गई तथा इस आलोचना का नेतृत्व करेन होर्नी, दूसरे प्रभावशाली मनोविश्लेषक द्वारा किया गया।

सभी मनोलैंगिक विकासात्मक अवस्थाओं में शैशनावस्था सर्वाधिक घटनापूर्ण होती है। इस अवस्था में विकास व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता है। इडिपल अवस्था से प्रौढ़ कामुकता की ओर प्रगति करना सामान्य विकास की अपेक्षा होती है। इडिपस मनोग्रन्थियों का समाधान करने में असफल होना प्रौढ़ मनस्ताप का केन्द्र बिन्दु होता है। फ्रायड के अनुसार मनस्ताप इडिपल प्रवृत्ति के प्रति अचेतन अव्यवस्था द्वारा परिलक्षित होती है। किस प्रकार बच्चा इडिपस स्थिति से चरित्र एवं व्यक्तित्व के विकास पर गम्भीर प्रभाव डालता है।

काम प्रसुति एवं प्रजनन अवस्थाओं के दौरान विकसित व्यक्तित्व

फ्रायड के विचारों में शैशवाकालीन कामुकता तथा व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक विकास पर इसके प्रभावों का वर्चस्व था। परिणामस्वरूप फ्रायड ने इस बात का अधिक उल्लेख नहीं किया है कि इन दो अवस्थाओं के दौरान विकास का क्रम किस प्रकार व्यक्तित्व से सम्बन्धित होता है। मनोविश्लेषण द्वारा विकास की प्रथम तीन अवस्थाओं की तुलना में इन दो अवस्थाओं पर अधिक बल नहीं दिया है।

काम प्रसुप्ति काल में विकास बच्चे को सक्षमता एवं उद्योग की चेतना प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। सक्षमता की भावनाएँ तथा उद्योग के गुण का विकास उन लाभों का परिणाम होता है जो बच्चा अपने अन्तःप्रेरण को विभिन्न अलैंगिक क्रियाओं द्वारा पैदा करता है जैसे– मनोरंजनात्मक, शैक्षणिक एवं सामाजिक क्षेत्र। बच्चे की सक्रिय रुचि का इन क्रियाकलापों की दिशा में गतिशील होने से बच्चा अपने को उत्तम बनाने, सिद्ध करने तथा रचनात्मक बनने का अवसर प्राप्त करता है।

प्रजजनावस्था, जो किशोरावस्था को प्रारम्भ के साथ सामान्यतः प्रारम्भ हो जाती है, सामूहिक क्रियाकलापों, व्यावसायिक योजना तथा पारिवारिक जीवन के दायित्व लेने की तैयारी की अवस्था होती है। किशोरावस्था के समाप्ति के साथ यह समाजीकृत, परहित की भावनाएँ भली–भांति स्थापित हो जाती है। व्यक्ति, आनन्द चाहने वाले, आत्मरति शिशु से

सारांश

सिगमण्ड फ्रायड द्वारा प्रस्तावित मनोलैंगिक विकास का सिद्धान्त, व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों में सर्वाधिक मान्य है। यह सिद्धान्त व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक विकास पाँच भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में अवलोकन करता है। इस अध्याय में हमने विभिन्न मनोलैंगिक अवस्थाओं के विकास तथा ये अवस्थाएँ किस प्रकार व्यक्तित्व के विकास क्रम को प्रभावित करता है, को समझने का प्रयास किया है। हमने लैंगिकता की अवधारणा एवं स्थिरण को भी सीखा है।

जैसा कि इस अध्याय में हमने सीखा है कि एक व्यक्ति अपने जीवनकाल के दौरान गतिशील वैभिन्य अवस्थाओं से गुजरता है जो व्यक्तित्व की रचना में निर्णायक भूमिका निभाता है। इन अवस्थाओं को मुख, गुद, शैशन, कामप्रसुप्ति एवं प्रजनन अवस्थाएँ कहते हैं। इन प्रत्येक अवस्थाओं में व्यक्ति विभिन्न प्रचार की कामुक क्रियाकलापों में व्यस्त रहता है जो प्रवृत्तियों को उत्प्रेरित एवं संतुष्ट करता है। हमने विकास की प्रत्येक अवस्था में कामोत्तेजक क्षेत्रों तथा विभिन्न अवस्थाओं में बच्चे की कामुक क्रियाओं की प्रकृति में व्यस्तता को विस्तारपूर्वक देखा है।

व्यक्तित्व के विकास के लिए इन अवस्थाओं के महत्व पर विचार विमर्श के दौरान यह संज्ञान में आया कि व्यक्ति की यौन ऊर्जा निरन्तरता, स्थानापन्न, उदात्तीकरण तथा प्रतिक्रिया निर्माण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से व्यवहार में सन्निहित हो जाती है। हमने यह भी देखा है कि मनोलैंगिक जननांकि की प्रक्रिया एक है जिसमें द्वन्द्वात्मक वृद्धि सम्मिलित होती है।

इसके द्वारा विभिन्न मनोलैंगिक विकासात्मक अवस्थाओं के दौरान व्यक्ति के अनुभवों के आधार पर व्यवहार के सामान्य या असामान्य प्रतिमान का विकास हो सकता है। जैसा कि उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट किया गया है कि असामान्य व्यवहार के विकास, विशिष्ट विकासात्मक अवस्था के दौरान घटित घटनाओं की प्रकृति द्वारा संरचित होता है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

कालविन एस. हाल एण्ड गार्डनर लिण्डजे, (1985), *थ्योरीज ऑफ पर्सनाल्टी,* जोहन वाइली ईस्टर्न लिमिटेड और संस इनक, न्यूयार्क

हजेले लांरी और जीगलर डेनीअल जे, (1981), *पर्सनेठी थ्रोशीय* मैक ग्राव हिल बुक कम्पनी, नई दिल्ली

हरलॉक, एलीजाबेथ बी, (1984), *चाइल्ड डेवलपमेंट,* छटवां संसकरण टाटा मैकगा हिल, न्यूयार्क

हरलॉक, एलीजाबेथ बी, (1984), *डेवलपमेंट साइकोलाजी,* पाँचवां संसथा।

परवीन लारेस ए, (1984), *पर्सनेल्टी थियोरी एंड रिसर्च*, जाहन विले एंड संस. इन्यान्यूयार्क